डॉ. हैमर जीवनी

डॉ. मेड राइक गीर्ड हैमर का जन्म 17 मई 1935 को जर्मनी के मेट्टमन में हुआ था।उन्होंने अपने बचपन को पूर्वी फ्रिसिया में अपने दादा - दादी के साथ बिताया।1953 में, उन्होंने ट्यूबिंगन विश्वविद्यालय में चिकित्सा, (Medicine) धर्मशास्त्र (Theology) और भौतिकी (Physics) का अध्ययन करना शुरू किया। 22 साल की आयु में, उन्होंने धर्मशास्त्र में मास्टर डिग्री पूरी की और फिर, चार साल बाद, चिकित्सा के डॉक्टर के रूप में अपना पेशेवर अनुज्ञप्ति प्राप्त की। बाद के वर्षों में उन्होंने जर्मनी के विभिन्न विश्वविद्यालयों के चिकित्सालयों में अभ्यास किया।

1972 में, डॉ. हैमर ने आंतरिक चिकित्सा (Internal Medicine) में अपनी विशेषज्ञता पूरी की और कैंसर रोगियों के प्रभारी चिकित्सक (internist) के रूप में ट्यूबिंगन के यूनिवर्सिटी चिकित्सालय में काम करना शुरू किया।

उसी समय, उन्होंने अपनी पत्नी डॉ. सिग्रिड हैमर के साथ निजी अभ्यास भी करना शुरू किया, जिनसे उनकी मुलाकात ट्युबिंगन में पढ़ाई के दौरान ही हुई थी। उन्होंने चिकित्सीय उपकरणों का आविष्कार करने हेतु एक असाधारण प्रतिभा दिखाई।

इन सब के साथ साथ, उन्होंने अपने कई आविष्कारों के पेटेंट भी लिए। कुछ मुख्य आविष्कार जैसे कि, गैर-दर्दनाक स्केलपेल (non-traumatic scalpel) **(**हैमर स्केलपेल**)** (Hamer Scalpel), जो रेजर ब्लेड की तुलना में बीस गुना तेज काटता है, एक अंग-मालिश टेबल (massage table), जो स्वचलित रूप से शरीर की आकृति को समायोजित करता है**।** व एक विशेष अस्थियों की आरी (special bone saw) जो शल्य-चिकित्सा में बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए।

उनके आविष्कारों से जब डॉ. हैमर और उनके परिवार को आर्थिक सहायता मिलने लगी तभी उन्होंने इटली को जाने का फैसला कर लिया। वहां उन्होंने, अपनी योजना अनुसार, रोम की मलीन बस्तियों में बीमारों का मुफ्त इलाज किया।

18 अगस्त, 1978 को, जब वे रोम में थे तब हैमर को दुखद खबर मिली कि उनके बेटे डिर्क को इटली के सावॉय के राजकुमार विक्टर एमानुएल ने गलती से गोली मार दी। और 7 दिसंबर,1978 को, डिर्क ने अपने गहरे जख्मों के कारण अपने पिता के ही बाँहों में दम तोड़ दिया। डिर्क को रोम के पिरामिड के सिटी- वॉल (city wall at pyramid in Rome) में ही दफनाया गया । डिर्क की मृत्यु के तुरंत बाद, डॉ. हैमर को स्वयं, वृषण कैंसर (testicular cancer) से ग्रसित होने का पता चला। चूँकि, वे पहले कभी भी गंभीर रूप से बीमार नहीं हुए थे, इसलिए उन्होंने कहा कि उनके कैंसर के विकास का सीधा संबंध उनके बेटे की मौत से होने वाली अप्रत्याशित सद्धमे से हो सकता है। वास्तव में,उन्होंने अंततः डिर्क के सम्मान में, इस अप्रत्याशित सद्दमे को डी एच एस (DHS) या "डिर्क हैमर सिंड्रोम" (Dirk Hamer Syndrome) कहा। डिर्क की मृत्यु और कैंसर के साथ अपने स्वयं के अनुभवो ने डॉ. हैमर को एक असाधारण वैज्ञानिक यात्रा पर अग्रसर कर दिया।

उन्होंने म्यूनिख विश्वविद्यालय में एक कैंसर क्लिनिक के प्रमुख प्रशिक्षक के रूप में, अपने कैंसर रोगियों के इतिहास की पड़ताल शुरू की और जल्द ही उन्हें पता चला कि उन सभी को उन्हीं की तरह एक अप्रत्याशित झटका लगा है।

तत्प्चात्, वे अपने शोध को और आगे ले गए। परिकल्पना के अनुसार मस्तिष्क से सभी शारीरिक प्रक्रियाओं को नियंत्रित किया जा सकता है।उन्होंने अपने रोगियों के मस्तिष्क का अवलोकन (brain scans) एवं विश्लेषण कर उनकी चिकित्सा अभिलेख और व्यक्तिगत इतिहास के साथ तुलना की। अपनी आश्चर्यजनक खोज के रूप में, उन्होंने कई प्रकार के "संघर्ष सद्दमो" (“conflict shock”) के बीच एक स्पष्ट सहसंबंध बनाया, कि कैसे ये सद्दमें विशिष्ट लक्षणों के रूप में अंग स्तर पर खुद को प्रकट करते हैं और यह सब मस्तिष्क से कैसे जुड़ा हुआ है। तब तक, किसी भी अध्ययन ने मन और एक रोगग्रस्त अंग के बीच मध्यस्थ के रूप में मस्तिष्क की भूमिका की जांच नहीं की थी। (psyche and diseased organ)

डॉ. हैमर ने अवधारणा स्थापित की, कि प्रत्येक बीमारी एक सद्दमे या आघात से उत्पन्न होती है, जो व्यक्ति को पूरी तरह मानसिक तनाव देती है। जिस समय अप्रत्याशित संघर्ष होता है,सद्दमा मस्तिष्क में एक विशिष्ट, पूर्वनिर्धारित क्षेत्र पर हमला करता है, जिसके कारण मस्तिष्क में घाव होता है (जिसको बाद में हैमर फोकस (Hamer Focus) या एच एच – हैमरसेर (HH-Hamerscher Herd) समूह कहा जाता है), वे कटाक्ष सकेंद्रित छलों के वर्ग (sharp concentric rings) के रूप में मस्तिष्क परीक्षण में दिखाई देतें हैं।

डॉ. हैमर के मस्तिष्क परीक्षण में इन स्केंद्रित घावों की पहचान की खोज से पहले, विकिरण चिकित्सक उन्हें मशीन में एक विधारी या दोष द्वारा निर्मित कलाकृतियों (artifacts) के रूप में मानते थे, लेकिन कंप्यूटर टोमोग्राफी[चिकित्सीय चित्रांकन] उपकरण के एक निर्माता, सीमेंस **(Siemens)** ने प्रमाणित किया कि ये लक्षित

आघात कलाकृतियाँ की नहीं हो सकती क्योंकि जब भी टोमोग्राफी (tomography) को दोहराया जाता है और इसे विभिन्न कोणों से लिया जाता है, तो एक ही स्थान पर एक ही विलय गोलाकार गठन हमेशा दिखाई देता है।

जब - जब मस्तिष्क की जो-जो कोशिकाएं सद्दमें (डी एच एस) (DHS) में आती हैं, उन कौशिकाओं से संबंधित शरीर के हिस्सों की कोशिकाओं में रासायनिक संकेतों द्वारा एक ट्यूमर का विकास या उन हिस्सों की कोशिकाओं का पिघलना, या उनकी कोई कार्यात्मक हानि का होना होता है। विशिष्ट संघर्षों को मस्तिष्क में विशिष्ट क्षेत्रों के लिए अपरिवर्तित रूप से बांधा गया है।मानव जीव के विकास के दौरान प्रत्येक मस्तिष्क क्षेत्र को उन स्थितियों पर तुरंत प्रतिक्रिया देने के लिए योजित किया गया है, जो जीवित रहने में हमें रक्षा प्रदान कर सके। जहां, मस्तिष्क का सबसे पुराना हिस्सा, मस्तिष्क स्थंभ,..श्वास लेने संबंधित प्राथमिक संघर्षों (primordial conflicts) (मृत्यु-भयावह संघर्ष) (death-fright conflict), प्रजनन (क्रय संघर्ष) (procreation conflict) और भोजन (निवाला संघर्ष) (morsel conflict) के साथ क्रमादेशित होता है वहीं मस्तिष्क का युवा भाग, सेरिब्रम अधिक उन्नत मामले (जुदाई, संघर्ष (separation conflicts), क्षेत्रीय संघर्ष (territorial conflicts) आदि से अंतर्संबंधित है।

डॉ. हैमर ने यह भी पाया कि हर बीमारी दो चरणों में आगे बढ़ती है: पहला, एक संघर्ष-सक्रिय चरण, जिसमें भावनात्मक संकट, भूख की कमी, और नींद न आना और फिर जब संघर्ष का हल किया जाए तो, एक उपचार चरण... यह वह अवधि है जिसमें मानस, मस्तिष्क और प्रभावित अंग उगाही के चरण से गुजरते हैं। थकान, सिरदर्द, सूजन, "संक्रमण" और दर्द द्वारा चिह्नित यह एक कठिन प्रक्रिया है।

डॉक्टर हैमर ने विकासवादी तर्क के साथ भ्रूण विज्ञान (Embryology) में दृढ़ता से योगदान दिया। उन्होंने अपने निष्कर्षों को "नवीन औषधि के पाँच जैविक नियम" (“The Five Biological Laws”) कहा। उन वर्षों में, वे 40,000 से अधिक मामलों के अध्ययन के साथ अपनी खोजों की पुष्टि करने में सक्षम हुए।

डॉ. हैमर का शोध, पारंपरिक चिकित्सा के कई मौजूदा सिद्धांतों को मौलिक रूप से परेशान करता है। मानस, मस्तिष्क और संबंधित अंग (the psyche, the brain and the corresponding organ) के बीच एक सार्थक परस्पर क्रिया के रूप में रोग के बारे में उनकी व्याख्या इस दृष्टिकोण को नकारती है कि रोग संयोग से या प्रकृति की गलती के परिणामस्वरूप होता है।

एक स्पष्ट वैज्ञानिक मापदंड के आधार पर, जर्मन न्यू मेडिसिन (GNM), घातक कैंसर कोशिकाओं या घातक रोगाणुओं के मिथकों को चकनाचूर कर देती है और "संक्रामक रोगों" (infectious diseases) के साथ-साथ कैंसर अर्बुद के लिए प्राचीन आपातकालीन उपायों की पहचान भी कराती है, जो किसी भी जीव को बचाने के लिए समय समय पर योजित किए गए हैं।कैंसर,जैसी बीमारियाँ की भयावह छवि को खत्म करने के साथ-साथ हर इंसान में पैदा होने वाले सार्थक जैविक उत्तरजीविका के लिऐ योजित क्रमों की भी पहचान कराती हैं। (meaningful biological survival programs).

अक्टूबर 1981 में, डॉ. हैमर ने पोस्ट-डॉक्टोरल थीसिस के रूप में यूनिवर्सिटी ऑफ ट्यूबिंगन में अपना शोध प्रस्तुत किया। इसका उद्देश्य उनके निष्कर्षों को समान मामलों पर परीक्षण करना था ताकि सभी चिकित्सा छात्रों को जर्मन न्यू मेडिसिन (GNM) सिखाई जा सके और रोगियों को जल्द से जल्द खोजों से लाभ मिल सके।

लेकिन दुविधाजनक रूप से, विश्वविद्यालय समिति ने उनके काम को अस्वीकार कर दिया और उनकी थीसिस का मूल्यांकन करने से इंकार कर दिया। विश्वविद्यालयों के इतिहास में यह एक अभूतपूर्व मामला था! साथ ही एक हैरानगी की भी बात थी।

डॉक्टर हैमर के थीसिस सौंपने के कुछ समय बाद ही, उन्हें, उनके निष्कर्षों से इनकार करने का अल्टीमेटम दिया गया,और उनके अनुबंध का मूल्यांकन भी नहीं किया गया। उनके लिए यह समझना बेहद मुश्किल था कि क्यों उनको, अपने वैज्ञानिक निष्कर्षों को पेश करने नहीं दिया जा रहा और साथ ही उन्हें क्लिनिक से निष्कासित भी कर दिया गया।

डॉ हैमर ने अपनी आधारभूमि स्वयं खड़ी की। उनकी बर्खास्तगी के बाद, उन्होंने अपने निजी स्व-अभ्यास के साथ-साथ अपना निजी शोध भी जारी रखा।उनके निजी चिकित्सालय के खोलने के कई प्रयासों को, उनके विरोधियों के ठोस चालों से विफल कर दिया। डॉ. हैमर के मरीजों के पत्र स्वास्थ्य अधिकारियों के पास अनुत्तरित ही रह गए या "लागू नहीं होते!"की टिप्पणी के साथ वापस कर दिए गए।

आज तक, उन अधिकारियों का रवैया बदला ही नहीं है।

1985 में, शादी के 29 साल बाद और चार बच्चों की परवरिश के बाद, सिग्रीड हैमर की मृत्यु हो गई। वह वास्तव में अपने बेटे की मृत्यु और सावॉय परिवार द्वारा अथक धमकियां एवं प्रताड़ित करने के दुख से कभी उबर नहीं पाईं थी।

डॉ. हैमर का उत्पीड़न 1989 में अंत हुआ, जब एक अदालत की सजा ने उन्हें औषधि का अभ्यास करने से रोक दिया,इस तथ्य के बावजूद कि उनका वैज्ञानिक कार्य कभी भी अस्वीकृत नहीं हुआ था। उन्होंने 51 वर्ष की आयु में अपना चिकित्सीय अनुज्ञप्ति इस आधार पर खो दी, कि उन्होंने कैंसर के मूल पर अपने निष्कर्षों का त्याग करने और आधिकारिक चिकित्सा के सिद्धांतों के अनुरूप होने से इनकार कर दिया था। चिकित्सीय अनुज्ञप्ति से वंचित, डॉ. हैमर अब मस्तिष्क स्कैन और मरीजों के अभिलेख प्राप्त करने के लिए अन्य चिकित्सकों पर निर्भर थे। लेकिन उन्होंने अपना काम जारी रखने की ठानी। 1987 तक डॉ. हैमर पहले ही दस हज़ार (10,000) से अधिक मामलों का विश्लेषण कर चुके थे और चिकित्सा में ज्ञात सभी रोगों के लिए पांच जैविक कानूनों की अपनी खोज का विस्तार करने में सक्षम भी हो गए । इस बीच, प्रेस और चिकित्सा प्रतिष्ठान ने उन पर और उनके काम पर आघात करने के लिए हर प्रयास जारी रखा।

टैब्लॉइड के पत्रकार और मेडिकल "विशेषज्ञ", डॉ. हैमर को एक चार्लटन, एक स्व-घोषित चमत्कारक, उपचारक, एक पंथ नेता, एक तर्कहीन बाहरी व्यक्ति, या एक पागल अपराधी के रूप में चित्रित करते हैं, जो कैंसर रोगियों को ‘जीवन-रक्षक’ पारंपरिक उपचारों से वंचित करता है।

डॉ. हैमर की चिकित्सीय खोजों को दबाने के लिए जारी प्रयासों के परिणामस्वरूप, डॉक्टरों के साथ-साथ बड़े पैमाने पर जनता को भी, जी एन एम (GNM) के ज्ञान से लाभ उठाने का मौका नहीं दिया गया है, और - 30 से अधिक वर्षों से - लाखों रोगियों को,उनके मानवीय, गैर-आक्रामक दृष्टिकोण के साथ जर्मन न्यू मेडिसिन के आधार पर इलाज कराने से भी वंचित कर दिया गया है।

1997 में, डॉ. हैमर को गिरफ्तार किया गया और बिना चिकित्सीय अनुज्ञप्ति के तीन लोगों को निशुल्क चिकित्सा जानकारी देने के लिए 19 महीने की कारावासीय सजा सुनाई गई।

इसके विपरीत, 1991 में, तेरह सालों के बाद, सवॉय के विक्टर एमैनुएल,जिन्होंने डिर्क हैमर को मार डाला था, उनकी सजा सिर्फ एक हथियार के अवैध कब्जे के लिए मात्र 6 महीने की सुनाई गई । जब डॉ. हैमर को गिरफ्तार किया गया, तो पुलिस ने उनके मरीज़ों की फाइलों की तलाशी ली। बाद में, एक सरकारी वकील ने मुकद्दमें के दौरान यह स्वीकार किया कि पाँच साल से अधिक समय के बाद भी, ज्यादातर टर्मिनल 'कैंसर वाले 6500 मरीजों में से 6000 जीवित थे।

हैरानी की बात यह है कि, उनके विरोधीयों ने ही, जर्मन न्यू मेडिसिन (German New Medicine) की उल्लेखनीय सफलता दर से संबंधित वास्तविक आँकड़े प्रदान किए थे।

आज तक,1984 और 1994 के अदालती आदेशों के बावजूद, ट्यूबिंगन विश्वविद्यालय ने डॉ. हैमर के वैज्ञानिक कार्यों का परीक्षण करने से निरंतर मना ही किया है। और उसी प्रकार आधिकारिक चिकित्सा भी समर्थन करने से इंकार करती है, बावजूद इसके कि जी एन एम (GNM) को कई चिकित्सको और कई पेशेवर संगठनों का सत्यापन प्राप्त है ।

9 सितंबर, 2004 को डॉ. हैमर को स्पेन में उनके घर पर गिरफ्तार किया गया था। एक यूरोपीय प्रत्यर्पण आदेश के बाद, डॉ. हैमर को फ्रांस में प्रत्यर्पित किया गया, जहाँ उन्हें फ्रांसीसी कारावास फ़्यूरी-मेग्रोगिस में रखा गया। उन्हें बिना परिवीक्षा के तीन साल की जेल की सजा सुनाई गई। दोष: "धोखाधड़ी और दवा के अवैध अभ्यास में जटिलता"। उन्हें फ्रांसीसी में अपने प्रकाशनों की उपलब्धता के कारण फ्रांसीसी नागरिकों की मौतों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया । यह उल्लेख जरूर किया जाना चाहिए कि डॉ. हैमर ने कभी भी किसी भी व्यक्ति से बात नहीं की थी। वे फरवरी 2006 में अपने अन्यायपूर्ण अवतरण से मुक्त हुए (कैरोलीन मार्कोलिन के पत्र में अंतर्राष्ट्रीय विवरण देखें।)

मार्च 2007 में, डॉ. हैमर को अपना स्पेनिश निर्वासन छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था। वे नॉर्वे गए, जहाँ वह अपने जीवन के काम को जारी रखने के लिए सुरक्षित थे। एक आघात के बाद, डॉ मेड. राइक गीर्ड का 82 वर्ष की आयु में 2 जुलाई, 2017 को सैंडिफ़ॉर्ड में अपने घर पर निधन हो गया। उन्हें जर्मनी के अर्लांगण में दफनाया गया,वहीं जगह, जहां पर पर उन्होंने अपनी प्यारी पत्नी सिग्रीड से शादी की थी।